श्री महावीर विधान

मंगल आशीर्वाद
समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण
सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

रचयित्री
परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)
Website : www.jainswastisandesh.com
Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति : श्री महावीर विधान
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
सप्तम संस्करण : 1100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2023
न्यौछावर राशि : 25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
प्रकाशक : श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

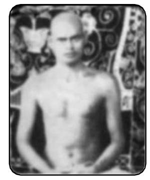

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

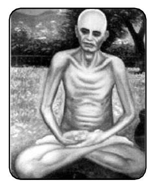

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

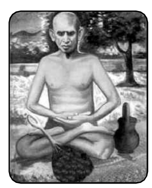

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

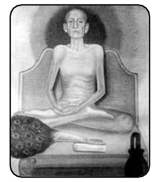

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

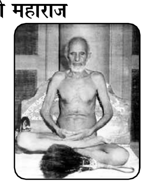

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.)
(तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

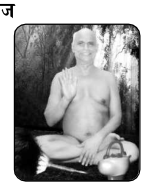

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

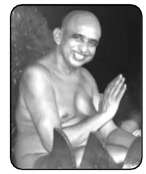

जन्म तिथि	–	वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान	–	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	–	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत	–	वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा	–	कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू	–	चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	–	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	–	माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद	–	ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि	–	कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	–	1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान	–	छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम	–	संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम	–	श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	–	श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत	–	परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा	–	एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत		
दीक्षा गुरू	–	प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	–	24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता	–	परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान	–	13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

त्रियोगी अहिंसक भगवान महावीर

अहिंसा के दीप को, प्रकाश दिया जिसने।
सत्य और आदर्श का, विकास किया जिसने।।
उन महावीर प्रभु को, नमन हम करते हैं।
हिंसा के तम का, नाश किया जिसने।।

जहां-जहां अहिंसा की चर्चा होती है वहां-वहां भगवान महावीर का नाम आ जाता है। अर्थात् वीर की चर्या अहिंसामयी थी। वे स्वयं के परिणामों की सूक्ष्म हिंसा भी नहीं करते थे और ना ही दूसरों को कष्ट देते थे। वे उपदेश मुख से बोलकर नहीं वरन् चर्या से करके दिखाते थे। वे मानसिक, वाचनिक और कायिक तीनों तरह की हिंसा से निवृत थे।

मानसिक हिंसा - मन के विचार बड़ी ही तेज गति से गमनशील होते हैं। जाने कितने ऐसे विचार हैं जो हिंसात्मक, निंदा, झूठ, चुगली, रागद्वेष, मोह आदि से पूरित होते हैं जब तक मन पर-पदार्थों में उलझा है हम स्वयं की भाव हिंसा कर रहे हैं। प्रभु महावीर प्रतिक्षण इन विचारों से दूर आत्मा के ध्यान में लीन रहते थे। उन्हें चारों गति के जीवों के अंदर केवल आत्मा दिखाई देती थी। इस आत्मा के ध्यान से उन्होनें परम आत्म शांति प्राप्त की थी।

वाचनिक हिंसा - हिंसा के विचारों के साथ निकले सभी वचन हिंसात्मक होते हैं। प्रभु महावीर ने दीक्षा धारण करते ही मौन व्रत ले लिया था। केवल ज्ञान होने तक वे मानसिक, वाचनिक दोनों तरह से मौन रहे। मौन रहने से अहिंसा व्रत का पालन होता है। खोटे वचन, गाली के वचन, क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह संग्रह के वचन हिंसात्मक होते हैं प्रभु महावीर इस तरह से भी अहिंसक सिद्ध हुऐ।

कायिक हिंसा - शरीर के द्वारा कार्य करने में चलने फिरने, उठने-बैठने में, असावधानी पूर्वक सामान उठाने, रखने में, कायिक हिंसा की पूर्ण संभावना होती है। अतः प्रभु ईर्या समिति से चार कदम आगे देखकर जीवों को बचाते हुये चलते थे। इस तरह प्रभु महावीर अहिंसा की मूर्ति थे।

सारे संसार में अहिंसा का संदेश देने वाले भगवान महावीर के हम अनुयायी हैं उनके वंशज हैं, उनकी शिक्षायें उनके संदेश हमें घर-घर तक पहुंचाना है। यदि अहिंसा का साम्राज्य आ गया तो, युद्ध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, अनैतिकता, मन मुटाव, तृष्णा, आकांक्षा, असहिष्णुता सभी एक कोने में धरे रह जायेंगे और शांति का साम्राज्य हो जायेगा।

ऐसे भगवान की आराधना, अर्चना और भक्ति से जन्म-जन्म के पाप कट जाते हैं। उन्हीं विश्व प्रभु महावीर के चरणों में विधान के माध्यम से कुछ भक्ति सुमन अर्पित किये हैं जिसके द्वारा आप भी इसमें अपने भाव शामिल कर प्रभु की भक्ति करें। कई वर्षों से मन में तमन्ना थी, यह विधान लिखने की पर भजनपुरा (दिल्ली) में यह भावना पूर्ण हुई और मात्र दो दिनों में यह पूर्ण हुआ। इसी भावना के साथ आप सभी को मेरा आशीर्वाद है, आप भक्ति भाव पूर्वक यह विधान करें।

आ. 105 स्वस्ति भूषण

दो दिन में रचा विधान ...

जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का नाम तो आप सब जानते ही हैं जिन्होंने सारे जगत को अहिंसा का मार्ग बताया है, उनकी ही भक्ति में प्रस्तुत यह विधान तो आप पढ़ रहे हैं जिसकी रचयित्री परम् विदुषी लेखिका, सरल स्वभावी, मृदु भाषिणी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी हैं जिन्होंने अब तक अस्सी पुस्तकों की रचना अल्प आयु में ही पूर्ण कर ली हैं। जिनके भजन, मुक्तक, पूजायें, विधान आदि लय बद्ध छन्द बद्धता से पूर्ण हृदय को छू लेने वाले हैं। पूज्य माता जी की अध्यात्मिक वाणी एवं विचार सुनकर भक्तजन भाव विभोर हो जाते हैं।

माता जी की भाषा शैली व उनकी विभिन्न प्रकार की लिखित रचनाओं को जन-जन के द्वारा सराहा जा रहा है जिसका लाभ भक्तजन ले रहे हैं। माता जी इतनी रचनाओं का लेखन करके संसार के प्राणियों का उत्थान एवं उनका मोक्ष मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। पूज्य माता जी द्वारा रचित जिनपद पूजांजलि में माता जी ने तरेसठ पूजाओं एवं पन्द्रह चालीसा में अलग-अलग भावों को प्रस्तुत करके जन-जन तक पहुंचाया है, जिसकी ख्याति आज दूर-दूर तक फैली हुई है, जिसमे से पूजा करके प्राणी का मन गद्-गद् हो जाता है और वह बार-बार उस पूजा द्वारा प्रभु का गुणगान करता है।

ऐसे ही सरल छन्दों एवं काव्यों में रचित यह महावीर विधान प्रस्तुत किया गया है। मात्र दो दिनों के बीच इस विधान को पूज्य माता जी ने लिपिबद्ध किया है। आप इसको पढ़कर अत्यंत शांति एवं शुद्ध भावों को महसूस करेंगे। प्रस्तुत विधान में माता जी ने छह वलयों में भगवान महावीर के गुणों को शुद्ध भावों द्वारा आपके सामने प्रस्तुत किया है, जिसमें प्रथम वलय में अनंत चतुष्टय के चार अर्घ्य दिये हैं। द्वितीय वलय में अष्ट प्रातिहार्य के आठ अर्घ्य हैं। तृतीय वलय में षोडश कारण भावना के सोलह अर्घ्यों के द्वारा निर्दोष परमात्मा का वर्णन किया है एवं पंचम वलय में बत्तीस अर्घ्यों द्वारा प्रभु महावीर के गुणों का वर्णन है, और षष्ठम वलय में बाकी सभी अर्घ्यों को भावों की पंक्ति में पिरोकर सुंदर अंकन किया है। अतः आप इसको एक बार अवश्य करें। आप सभी को मेरा सादर जय जिनेन्द्र एवं माता जी के चरणों में बार-बार बन्दामी बन्दामी बन्दामी।।

शालू दीदी(संघस्थ)

श्री महावीर विधान

माँडला

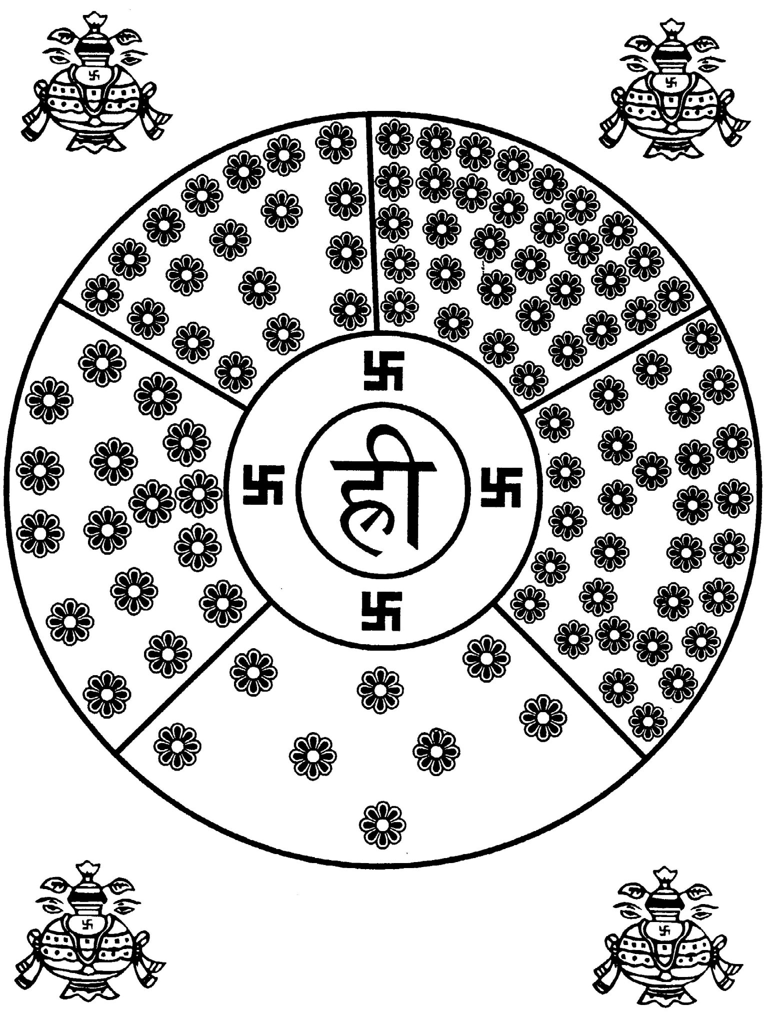

श्री महावीर विधान

स्थापना (शंभू छंद)

अंतिम तीर्थंकर महावीर, भक्तों के तारण हार बने।
हे महापुरुष हे अतिवीर, भक्तों के पालनहार बने।।
शब्दों के द्वारा स्तुति हम, पूरी प्रभु ना गा सकते हैं।
कुछ भक्ति सुमन सजा लाये, चरणों में अर्पित करते हैं।।

दोहा

लक्ष्य मोक्ष का ही बना, पूजा करते आज।
ध्यान का धन इससे मिले, नमता सकल समाज।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषद् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभू छंद

हीरा जैसी यह स्वच्छ आत्म, कर्मों के मैल के बीच पड़ी।
ना देखा है ना जाना है, इसलिये जगत के बीच खड़ी।।
हे महावीर निर्मल आतम, जल के सम निर्मल करना है।
कर्मों की कालिख धुल जाये, संसार कष्ट को हरना है।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि0 स्वाहा।

जग में शीतल है आत्म ज्ञान, हम मोह की अग्नि में जलते।
चंदन सम शीतल महावीर, हम नाम तुम्हारा नित जपते।।
संतोष का अमृत पिला हमें, चंदन सम शीतल कर देना।
चंदन से पूजूं नाथ तुम्हे, संसार ताप को हर लेना।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय जलं नि0स्वाहा।

चंचलता ने जग भटकाया, मैं पतित हुआ जग घूम रहा।
तेरी स्थिरता देख प्रभो, सच्चे सुख का अब स्रोत बहा।।
हम मृत्यु नहीं निर्वाण पायें, ऐसी स्थिरता दे देना।
अक्षत से अक्षय शीघ्र होऊं, ऐसी शक्ति प्रभु भर देना।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि0 स्वाहा।

कितनी सुंदर यह देह मिली, भोगों ने काली कर दीनी।
बस बैठ वासना के रथ पर, नहि आतम में दृष्टि दीनी।।
ये पुष्प चढ़ाने लाया हूँ, कर्मों के शूल हटाने को।
भक्ति से प्रभु पूजा करते, निज आतम गांव में आने को।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं नि0 स्वाहा।

भोजन है जीवन यापन को, पर चिंतन चिंता भोजन की।
आतम भोजन ना कर पाये, पूजा से चिंता आतम की।।
हम जीने को भोजन खावें, ऐसा संयम मैं अब पाऊं।
फिर क्षुधा रोग यह नश जाये, तो चरण तुम्हारे बस जाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि0 स्वाहा।

इस देह की देहरी में दीपक, प्रभु सम्यग्ज्ञान का जल जाये।
अज्ञान निशा की अंधियारी, आतम से पल में हट जाये।।
तेरी इस ज्ञान ज्योति से प्रभु, मैं आतम ज्योति जलाऊंगा।
दीपक ले पूजा मैं करता, फिर केवल दीप को पाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि0 स्वाहा।

कष्टों के बीच घिरे जिनवर, दुःखों के शूल ये चुभते हैं।
खुद के बोये हैं बीज प्रभो, जब चुभे तो तुमसे कहते हैं।।
आठों कर्मों का यह समूह, संसार राह को दिखलाता।
पुरुषार्थ करुं अब धूप के संग, तो मुक्ति सुख में पहुंचाता।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि0 स्वाहा।

कई जन्मों से चलकर के प्रभु, अब शरण आपकी आया हूँ।
दर्शन से जीवन सफल हुआ, सच्चा फल जब ही पाया हूँ।।
फल से जग फल की चाह नहीं, बस मोक्ष महाफल पाना है।
हे दयानिधि करुणा सागर, फिर लौट ना जग में आना है।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि0 स्वाहा।

कभी माया ने कभी तृष्णा ने, कभी मोह ने मुझको भटकाया।
कभी क्रोध करुं कभी मान करूं, इसने ही जग में अटकाया।।

सब जाल करम का टूट जाये, यह अर्घ्य चरण में लाया हूँ।
तेरी पूजा से हे भगवन, सच्चा सुख इस क्षण पाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

त्रिभंगी छंद

रत्नों की बरसा, हरषा-हरषा, धन कुबेर ने कीनी थी।
न रही गरीबी, हुई करीबी, झोलियां भी भर दीनी थी।।
लख मंगल सपने, नाम को जपने, त्रिशला मां का दिल हर्षाया।
प्रभु गर्भ में आये, आनंद छाये, धर्म सभी को था भाया।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमे जिनराजा, बाजे बाजा, खुशियां चारों ओर हुई।
ऐरावत हाथी, देव की पंक्ति, वृष्टि चारों ओर हुई।।
मन सबका हर्षित, हृदय आलोकित, आये त्रिभुवन स्वामी हैं।
हम अर्घ्य चढ़ायें, भक्ति बढ़ायें, आपहि अंतर्यामी हैं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन जग से व्याकुल, बनें निराकुल, जड़ चेतन का भेद करें।
संसार असारा, करें किनारा, मन वैराग्य ही कर्म हरें।।
दीक्षा को पाया, वन मन भाया, देव पालकी लेके चले।
फिर ध्यान लगाया, आतम ध्याया, आत्म-आत्म से आन मिले।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग हुआ उजाला, तम का जाला, कर्म धातिया घात दिये।
जिन महल बनाया, भव्य बुलाया, दिव्य ध्वनि बरसाय दिये।।
प्रभु मुख को देखें, चरण में बैठे, आनंद आतम पाया था।
दो ज्ञान किरण को, कर्म हरण को, भक्त ने शीश झुकाया था।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना, कुछ न कहना, छोड़ प्रभु को भागी थी।
मुक्ति को पाया, आनंद आया, भक्त आत्मा जागी थी।।
सिद्धों की श्रेणी, सुख निर्झरणी, सभी समान ही पाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ायें, शीश झुकायें, पूजा कर हर्षाते हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णामावस्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बात बड़ी मतलब बड़ा, बड़ा है जिनका ज्ञान।
ऐसे श्री महावीर को, बारंबार प्रणाम।।

।।मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(प्रथम वलय)

अनन्त चतुष्टय गुण अर्घ्यावली

चौपाई

दर्शन में कुछ नहीं बचा है, सर्व लोक उसमें झलका है।
सब कुछ देखें चिंता नाहिं, रहते हैं निज आतम मांहि।।
हमें भी ऐसी शक्ति देना, देखें पर कुछ नहीं है लेना।
कर्त्ता भोक्ता बुद्धि छूटे, पूजा से बंधन भी छूटे।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

आत्म ज्ञान आतम को जाने, सच्चा केवल ज्ञान है माने।
जग का ज्ञान जगत भरमाये, आतम ज्ञानी आनंद पाये।।
एक ज्ञान जग में सच्चा है, आत्मज्ञान की बस अच्छा है।
जड़ को तज आतम मय होना, बीज पाप का कभी ना बोना।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई किसी को सुखी न करता, कोई किसी का दुख न हरता।
मोह की माया खेल दिखाये, मोह को तज सुख आनंद आये।।
मोह शत्रु जब प्रभु ने नाशा, सुख अनंत पाया अविनाशा।
मोह तजूं सुख पाने आये, चरणन में आ शीश झुकाये।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधाओं के बीच धिरे हैं, अंतराय के बीच फिरें हैं।
शक्ति नहि और रोगी तन है, चिंताओं से रोगी मन है।।
अंतराय के नाशन हारे, आया प्रभु अब तेरे द्वारे।
हो अनंत शक्ति के धारी, मेटो विपदा शीघ्र हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

अनंत चतुष्टय धर प्रभो, आतम ज्ञान में लीन।
भक्ति बस गुणगान कर, पाऊं मोक्ष प्रवीण।।

ॐ ह्रीं प्रथम वलये अनंत चतुष्टय सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ायें)

(द्वितीय वलय)

अष्ट प्रातिहार्य युक्त वीर अर्घ्यावली

त्रिभंगी छंद

यह वृक्ष अशोका, करे विशोका, सुन्दर शोभा पावत हैं।
मणियां सब चमके, सूर्य भी दमके, जिन का मान बढ़ावत हैं।।
महावीर सरोवर, कल्प तरुवर, वांछा पूरी करते हो।
छाया में बैठूँ, तुमको देखूँ, झोली सब की भरते हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के सिर ऊपर, छत्र है ता पर, तीन लोक के नाथ बने।
जग महिमा गाये, कष्ट हटाए, करुणा सागर आप बने।।6।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों की ज्योति, ज्ञान के मोती, सिंहासन में शोभ रहे।
तुम अधर विराजे, शोभा साजे, आतम का नित बोध रहे।।7।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वनि दिव्य सुनाए, मार्ग बताए, तत्वों का उपदेश दिया।
सबकी निज भाषा, ज्ञान की आशा, कथन आपके पूर्ण किया ।।8।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दुन्दुभि बाजे, जय-जय काजे, प्रभु संदेश सुनावत हैं।
कहें आपकी महिमा, आपकी गरिमा, भव्यों को बतलावत हैं।।9।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सुमन भी बरसे, पापी तरसे, ऐसी थी शोभा न्यारी।
तुम सुयश सु गाया, मन को भाया, शोभा पाए त्रिपुरारी।।10।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं कोटि भास्कर और निशाकर, भामण्डल से हार गया।
निज दर्श दिखाये, भव बतलाए, अष्ट कर्म का भार गया।।11।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर चमर ढुराएं, शोभा पाएं, चन्दा जैसे चमक रहे।
प्रभु की शुभ कांति, तोड़े भ्रान्ति, सूरज सम प्रभु दमक रहे।।12।। महावीर

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

प्रातिहार्य सँग शोभित हुये, पा के तुम्हारा तेज।
अतिशय की बरसात हो, करुं आपकी सेव।।

ॐ ह्रीं द्वितीय वलये अष्ट प्रातिहार्य सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

(तृतीय वलय)

षोडस कारण भावना गुण अर्घ्यावली

चाल छंद (ऐ मेरे वतन के)

दर्शन को सम्यक कीना, सम्यक दर्शन पा लीना।
जड़ चेतन भेद को जाना, चेतन का ध्यान लगाना।।13।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थे विनय महागुण धारी, अभिमान की शक्ति हारी।
झुककर आतम को पाया, झुकने में आनंद आया।।4।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शील सहित है प्राणी, रक्षा करती जिनवाणी।
हो शील महाव्रत धारी, शरणा हम आये तिहारी।।5।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान आपने पाया, उससे आतम को ध्याया।
हम जग में उसे लगाते, इससे ही दुख को पाते।।16।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग तज भोगों को छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
हम लीन उसी में रहते, दुख पाने पर हम कहते।।17।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस त्याग धर्म अपनायें, नहि शक्ति कभी छिपायें।
हम त्याग की शक्ति पायें, जग त्याग आत्म को ध्यायें।।18।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति से तप भी करते, तप से जड़ कर्म को हरते।
तप ने तन को चमकाया, तप से सौभाग्य जगाया।।19।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साधु समाधि' करवाते, मुक्ति पथ सहज बनाते।
हम भी समाधि से जायें, इक दिन मुक्ति सुख पायें।।20।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्ति करते हैं, तन मन के दुख हरते हैं।
सेवा साधन बतलाया, तीर्थकर पद को पाया।।21।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्य करण भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत भक्ति सुखकारी, सुख पावें शरण तिहारी।
भक्ति शुभ भाव बनाये, चरणों में शीश झुकाये।।22।।

ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ पर चलते हैं, संग शिष्य वहां पलते हैं।
आचार्य भक्ति को गाऊं, चरणों में शीश झुकाऊं।।23।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं शास्त्रों के ज्ञाता, मिलती छाया में साता।
ज्ञानी की भक्ति करता, तब मेरा ज्ञान भी बढ़ता।।24।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम के वचन सुहाते, प्रवचन भक्ति को ध्याते।
प्रवचन में श्रद्धा भारी, मिटती है विपदा सारी।।25।।

ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक कार्य हमारे, पूरे कर दुःख निवारे।
उनकी भक्ति को गाऊं, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊं।।26।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का धर्म है सच्चा, जिन धर्म है सबसे अच्छा।
हर हृदय में दीप जलाना, जिनधर्म जगत फैलाना।।27।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य सभी से करते, नहि द्वेष भाव को धरते।
फिर भी आतम के ध्यानी, सच्ची है तेरी वाणी।।28।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

सोलह भाव को भा बने, तीर्थंकर महावीर।
शक्ति रख हम भावते, मिले मुक्ति का तीर।।

ॐ ह्रीं तृतीय वलये षोडस कारण भावना सहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ायें)

(चतुर्थ वलय)

18 महादोष रहित अर्घ्यावली

चौपाई छंद

चारों गति में भूख सताये, प्रभो आपके पास न आये।
चरण आपके पूजू वीरा, हरुँ वेदना पाऊंगा तीरा।।29।।

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

लगी प्यास पानी पीते हैं, प्रभो आप जल बिन जीते हैं।
किन्तु प्यास अब भक्ति जल है, इससे कर्म दुखों का हल है।।30।।

ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

डर ने जग के जीव डराये, किन्तु डर तुमसे डर खाये।
सातों भय से मुक्त करा दो, भवसागर से नाव तिरा दो।।31।।

ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

क्रोधी मानव जहर उगलता, क्रोध आपके पास न पलता।
छूटे क्रोध शांति को पाऊं, इन भावों से अर्घ्य चढ़ाऊं।।32।।

ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

चिता के सम चिंता में जलते, आपमें सुख के सुमन हैं खिलते।
चिंता चिंतन सम बन जाये, प्रभु भक्ति से चिंता जाये।।33।।

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

रोग बुढ़ापा बीमारी है, किन्तु आपसे यह हारी है।
मुझे बुढ़ापा कभी ना आये, जनम-जनम के दुख मिट जायें।।34।।

ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

राग आग सा सदा जलाये, वीतराग वीरा कहलाये।
अशुभ राग तज शुभ में आऊं, शुभ को तज तुमसा हो जाऊं।।35।।

ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

मोही जीव सदा दुख पाये, निर्मोही प्रभु को न सताये।
इससे जीव शरण में आते, निर्मोही हों भाव बनाते।।36।।

ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

जीव सदा औषध खाता है, फिर भी रोग पास आता है।
मोह नाश कर रोग को नाशा, इससे स्वस्थ आत्मा वासा।।37।।

ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

जीवन संग मृत्यु आती है, प्राणी को ये ना भाती है।
मृत्यु नहि निर्वाण आपको, मृत्युंजयी तुम हरें ताप को।।38।।

ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं पसीना जरा भी आता, शुद्ध स्वच्छ तन मन का वासा।
तप से तन भी शुद्ध किया है, भक्त ने शीश ये झुका दिया है।।39।।

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

भुजंग प्रयात छंद

(तर्ज - नरेन्द्रं-फणीन्द्रं)

नहि खेद तुमको, किसी पर भी आये।
किया नाहि कारज, न श्रम ही सताये।।
यही खेद प्राणी को, चिंता भी देता।
शरण तेरी जो है, वही सौख्य लेता।।40।।

ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमान प्राणी को, झुकने न देता।
करता विनय नाहि, बस दुख ही लेता।।
त्रैलोक्य का धन, चरण तेरे झुकता।
अभिमान किन्तु, जरा नाहि टिकता।।41।।

ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

रति दोष दूजे में, प्रेम बढ़ाये।
स्वयं को है भूला, रति ही भ्रमाये।।

प्रभो आप प्रीति, निजातम से करते।
इसी से भगत तेरी शरणा को वरते।।42।।

ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

तीनो ही लोकों को, तुमने निहारा।
विस्मय न कोई, जो देखा नजारा।।
करम का सभी फल, है आश्चर्य देता।
करुं भक्ति तेरी, बनूं आप जैसा।।43।।

ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा के वश में, जगत के हैं प्राणी।
नहीं होश खुद का, भूले तेरी वाणी।।
निद्रा नहीं पलभर, आपको आये।
करुं भक्ति तेरी, मुझे न सताये।।44।।

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

लेता जनम हूँ, महा कष्टकारी।
ये जन्मों की विपदा, प्रभु ने निवारी।।
दुबारा जनम ना हो, प्रभु ने निवारा।
जनम नाश होवे, मैं आया हूँ द्वारा।।45।।

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

प्रतिकूल वस्तु में, अरति सताये।
करुं द्वेष उससे, वो चिंता बढ़ाये।।
अरति दोष नाशा, सदा सौख्य धारी।
हम आये शरण में, प्रभु जी तिहारी।।46।।

ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

दोष अठारह बीच में, घिरा हूँ मैं जिनदेव।
नैया मेरी तार दो, करुं आपकी सेव।।

ॐ ह्रीं चतुर्थ वलये अष्टादश महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। **(श्रीफल चढ़ाऐ)**

(पंचम वलय)

वीर गुण अर्घ्यावली

(दोहा)

तीन लोक को देखते, दृष्टा आतम राम।
यह शक्ति मुझको मिले, बारंबार प्रणाम।।47।।

ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

अक्षर सम अक्षय हुऐ, अक्षर हैं भगवान।
भक्त चरण को पूजते, बारंबार प्रणाम।।48।।

ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

भाग्य विधाता भक्त के, भाग्य हुआ सौभाग्य।
भक्ति से पूजा करुं, मिटे कर्म के दाग।।49।।

ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

विद्यायें चरणों झुकी, तुम्हे बनाया ईश।
भक्त नित्य भक्ति करें, झुका चरण में शीश।।50।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

शाश्वत सुख मुक्ति मिली, शाश्वत आतम राम।
शाश्वत पद की आशा है, बारंबार प्रणाम।।151।।

ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

ज्येष्ठ श्रेष्ठ हो जगत में, भक्त के गुरुवर आप।
छाया तेरी बैठकर, करें आपका जाप।।52।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

गुण से निर्मित मूर्ति हो, सुन्दरता छविमान।
विश्व मूर्ति तुम सम नहीं, बारंबार प्रणाम।।53।।

ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0स्वाहा।

इंद्रिय वश करके किया, आतम साधन योग।
प्रभो जिनेश्वर भक्त को, मिले आप संयोग।।54।।

ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

कर्म जीत कर सुख मिला, सिद्धालय का राज।
कर्म के हारे हम प्रभो, मिले मुक्ति का ताज।।55।।

ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

गीता छंद

(प्रभु पतित पावन ...)

संसार के बंधु जगत में, छल कपट माया करें।
तुम सच्चे बंधु भव्यों के, भव्यों के कर्मों को हरें।।56।।

ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य रश्मि दीप ज्योति, से भी ज्यादा तेज है।
मैं ज्योति से ज्योति जलाऊं, तो मिले सुख सेज है।।57।।

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

मोह से मोहित हुई, ये जनता सारी रोती है।
तुम मोह को निर्मोह कीना, तो मिला सुख मोती है।।58।।

ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

धारण किया है धर्म को, तुम धर्म चक्री नाथ हो।
इस चक्र से जग चक्र टूटे, और मिले सुख पाथ हो।।59।।

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

अंतिम जनम है आपका, फिर से जनम ना पाओगे।
कर्मों के बंधन तोड़ दीने, फिर ना जग में आओगे।।60।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

नश्वर जगत की माया है, अविनाशी सुख प्रभु आपका।
पावन तेरा है नाम जिनवर, मिटता सकल जग ताप का।।61।।

ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0स्वाहा।

ध्याता तुम्हीं हो ध्येय तुम हो, ध्यान भी तेरा धरें।
निज आतमा से आतमा पा, मुक्ति के सुख को भरें।।62।।

ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप घोर कीना कर्म नाशे, पूज्य पद को पा लिया।
सुर नर करे तब अर्चना, सर को चरण में झुका दिया।।63।।

ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य नि0 स्वाहा।

पा दिव्य शांति दिव्य रूप को, लख सभी हर्षाये थे।
हो दिव्य आत्मा ज्योति पावन, पाने चरणों आये थे।।64।।

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

वाणी से अध्यात्म रस की, बूंदे झरना सम बही।
हित मित प्रभु प्रिय बोलते, भक्तों के हित को ही कही।।65।।

ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

प्रभु चित्त शांति सिन्धु है, नहि क्षोभ का भी काम है।
तुम नाम से ही शांति आई, शांति मय विश्राम है।।66।।

ॐ ह्रीं चित्त शांति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

सन्मार्ग पर चलना सिखाते, धर्म पथ पर हम चलें।
भव-भव की बाधायें हरें, प्रभु मुक्ति की मंजिल मिले।।67।।

ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

प्रभु आगे-आगे चलते हैं, पीछे सभी संसार है।
जो तुम चरण पथ चल दिया, तो मुक्ति भी तैयार है।।68।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

सब योगियों के द्वारा अर्चित, अर्चना के पात्र हो।
हम भक्त भी अर्चन करें, हे वीर मेरे मात्र हो।।69।।

ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से करम का मैल धोकर, शुद्ध आतम पा लिया।
प्रभु शुद्ध आतम हो हमारा, चरण शीश झुका दिया।।70।।

ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल

(तर्ज - दे दी हमे आजादी...)

लेकर के दया ध्वजा जग में, वीर उड़ायें।
भक्तों की हरी पीर, सब पे दया दिखायें।।71।।
इस तन में कैद आत्मा को, मुक्त कीजिये ।
संसार के दुःखो से बचा, शरण लीजिये ।।

ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तुम हो अनंत गुण के सिंधु, बूंद दीजिये।
होवे हमारा जग का अंत, ज्ञान दीजिये।।72।। इस...

ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन धर्म के अध्यक्ष, रक्षा मेरी कीजिये।
शासन में अपने रख, सुधार मेरा कीजिये।।73।। इस...

ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दीनबंधु श्री पति, जग में हो कहाते।
भक्तों के दुःख करुणा करके, शीघ्र भगाते।।74।। इस...

ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों के बीच कांटे जैसे, वृक्ष में रहते।
वैसा हमारा सुःख है, बाधाओं को सहते।।75।। इस...

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चंचल हैं मन हमारा प्रभु, अचल कीजिये।
मन क्षोभ है अशांत है, विश्राम दीजिये।।76।। इस...

ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वीर न्याय शास्त्र के, ज्ञाता भी कहाते।
फिर मुक्ति देने में मुझे क्यों, देर लगाते।।77।। इस...

ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वीर ने जिन तीर्थ का, शुभ चक्र चलाया।
भक्तों को तिरा जग से, मुक्ति सौख्य दिलाया।।78।। इस...

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मुक्ति मंजिल दूर है, जाना है परदेश।
वीर प्रभु जी शक्ति दो, मिले दिगम्बर वेश।।

ॐ ह्रीं पंचम वलये वीर गुण सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ाये)

(षष्टम् वलय)

त्रिशंत गुण अर्घ्यावली

(तर्ज शेर चाल)

संसार के डर आपसे, डर कर हैं भागे।
मेरे भी भय को दूर करो, आत्म में जागे।।79।। इस...

ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शोक रहित आप हो, विशोक कीजिये।
हों रोग शोक नष्ट सारे, सौख्य दीजिये।।80।। इस...

ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब आत्मा के रूप को प्रभु, तुमने निहारा।
तब जग की सभी वस्तुओं से, किया किनारा।।81।। इस...

ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वान नाम आपका, कुछ बुद्धि दीजिये।
संसार में फंसा हूँ प्रभु, कृपा कीजिए।।82।। इस...

ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति को पाके शांति जग में, बांटी आपने।
शांति के खजाना अशांति, छांटी आपने।।83।। इस...

ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्म के अमृत से आप, अमर हो गये।
भक्तों ने करी भक्ति, पाप मैल धो गये।।84।। इस...

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रो के देवता हो, मंत्र तुमसे बने हैं।
भक्तों की करी रक्षा, भक्त ध्यान सने हैं।।85।। इस...

ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु पे विजय करके ही, निर्वाण बनाया।
मृत्युंजयी मैं भी बनूं, प्रभु शरण में आया।।86।। इस...

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषार्थ किया आपने औ, सफल हो गये।
भक्तों को भी आशीष दो, तो सफल हो गये।।87।। इस...

ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहते सदा प्रसन्न दुःख, नाही सताये।
मुझमें प्रसन्नता भरो, हम जग के सताये।।88।। इस...

ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यों का कोष आपके, चरणों का दास है।

वह पुण्य मुझको प्राप्त हो, प्रभु मुझको आश है।।
मैं आया हूँ चरण में प्रभु, पुण्य बढ़ाने।
करता हूँ तेरी भक्ति प्रभु, पाप घटाने।।89।।

ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन तुम्हारा नाम है, मन शुद्धि कराये।
जपता रहूँ मन वच से सदा, सौख्य दिलाये।।
प्रभु नाम की माला को सदा, जपता ही रहूं।
पावन हो मेरी आत्मा, मैं भजता ही रहूं।।90।।

ॐ ह्रीं पावन आत्मा दर्शनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

(तर्ज : ऐ मेरे वतन के...)

नहि कलह आप करते हो, निर्द्वन्द आप रहते हो।
मेरा क्लेश भी नाशो, शांति के संग प्रकाशो।।
प्रभु पूजा कर्म नशाती, जग की बातें ना भाती।
प्रभु अपने पास बुलाओ, चरणों में मुझे बिठाओ।।91।।

ॐ ह्रीं संसार द्वंद्व विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यातम अमृत पाया, जग का आहार न भाया।
मैं आतम ध्यान लगाऊं, अध्यातम भोजन खाऊं।।92।। प्रभु.

ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपति चरणों की दासी, भक्तों की अंखियां प्यासी।
फिर भी अभिमान ना करते, निज आतम में ही रहते।।93।। प्रभु.

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म कलंक हैं धोये, आतम चादर में सोये।
मेरे कलंक भी नाशो, आतम अंदर में वासो।।94।। प्रभु.

ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहि कोई उपद्रव आये, सब देख तुम्हें झुक जायें।
सब दूर उपद्रव जावें, इससे पूजा को गावें।।95।। प्रभु.

ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि के चिंतन से, सुख पायें मन मंथन से।
सुख का वैभव हम पायें, चरणों में शीश झुकायें।।96।। प्रभु.

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औषध सम नाम तुम्हारा, रोगों को करें किनारा।
हम स्वस्थ्य आत्म को पायें, चरणों में शीश झुकायें।।97।। प्रभु.

ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन और साध्य हमारे, मुक्ति मिले वीर सहारे।
हो मोक्ष मार्ग के नेता, कर्मों के आप विजेता।।98।। प्रभु.

ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वीर पिता हो मेरे, बालक चरणों में तेरे।
रक्षा प्रभु मेरी करना, संकट को मेरे हरना।।99।। प्रभु.

ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि कर जोड़ के आये, प्रभु आतम ध्यान लगायें।
ऋद्धि सिद्धी हम पायें, चरणों में शीश झुकायें।।100।। प्रभु.

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धी प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुं ओर नाम है तेरा, तेरे नाम से होय सवेरा।
महायश कीर्ति जग फैली, भक्तों ने किरणें ले ली।।101।। प्रभु.

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद सरोवर पाया, पूजा कर मुझे भी आया।
कर्मों के कांटे काटे, तब ही आनंद को बांटे।।102।। प्रभु.

ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सब जीव सुखी हों, नहि कोई जीव दुखी हो।
महामैत्री जग में होवे, सब द्वेष भाव को खोवें।।103।। प्रभु.

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर हो आप हमारे, दीक्षा को आया द्वारे।
तेरा मैं शिष्य बनूंगा, मुक्ति सुख को पालूंगा।।104।। प्रभु.

ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाक्रोध को शांत किया है, शांति का दान दिया है।
मैं क्रोध रहित हो जाऊं, ऐसी शक्ति को पाऊं।।105।। प्रभु.

ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुं और शांति फैलाओ, मंगल उपदेश सुनाओ।
कल्याणकारी हैं वीरा, रत्नों में जैसे हीरा।।106।। प्रभु.

ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों के इष्ट तुम्हीं हो, जग में विशिष्ट तुम्हीं हो।
सब इष्ट कार्य हो जावें, तेरी पूजा को गावें।।107।। प्रभु.

ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा तृप्त रहते हैं, इंद्रिय सुख ना चाहते हैं।
आतम सुख तृप्ति मैं पाऊं, जब वीर चरण में आऊं।।108।। प्रभु.

ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जीवन संध्या डूबती, हो न जाये रात।
निज आतम की भोर हो, दे दो बीरा साथ।।

ॐ ह्रीं षष्ठम वलये श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री फल चढ़ायें)

पूर्णांर्घ्य

शंभू छन्द

रत्नत्रय की पावन गंगा, भक्ति से नहाने आया हूँ।
तन मन निर्मल यह हो जाये, यह भाव साथ में लाया हूँ।।
महावीर प्रभु की वाणी ने, जग जीवों का उद्धार किया।
हम अर्घ्य समर्पित करते हैं, जिसने दुख का संहार किया।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

कर्मों का जाला, जिनवर माला, नाम सदा ही जपते हैं।
वीरा की पूजा, काम न दूजा, कर्म सदा ही कटते हैं।।
जयमाला गाऊं, जय जग पाऊं, संकट सारे दूर करो।
मन सुमन खिलाओ, ज्ञान पिलाओ, ज्ञानामृत से तृप्त करो।।

(शंभू छंद)

हे वीर तुम्हारा द्वारा ही, बस अब तो मेरा ठिकाना है।
सारी दुनिया में घूम चुका, अब शरण तेरी बस जाना है।।
फूलों के सम रंगीन राग, जग में बस मुझे लुभाते हैं।
फिर कष्ट के कांटे चुभते तो, तेरे दर शांति पाते हैं।।
रत्नों की बारिश आंगन में, कुंडलपुर के जब बीच हुई।
मां ने सोलह सपने देखे, धरती पर उस क्षण शांति हुई।।
त्रिशला की गोदी धन्य हुई, जब जन्म आपने पाया था।
सिद्धार्थ मगन हो नाचे थे, सुर स्वर्ग का वैभव लाया था।।
कल्याणक जन्म मनाने को, सिंहासन इन्द्र ने छोड़ दिया।
ऐरावत हाथी को लाया, पर्वत सुमेरु पर न्हवन किया।।
शत अठ विशाल थे स्वर्ण कलश, गंगा सम सिर पर धार बही।
कोटि-कोटि सुर नृत्य करें, मुख से सबने जय कार कही।।
इन्द्राणी ने श्रृंगार किया, वस्त्राभूषण पहनाये थे।
माता को गोदी दे बालक, सुर तांडव नृत्य दिखाये थे।।
धीरे-धीरे चंदा के सम, वीरा बालक भी बढ़े चले।
हर गोदी लेकर के झूमे, प्रिय मित्रों के मुख कमल खिले।।

जिसने तुमको स्पर्श किया, रोगी तन स्वस्थ हुआ तब ही।
वाणी को जिसने कान सुना, अमृत सी मिश्री घुली तभी।।
तुम खेल-खेल में मित्रों को, आतम का पाठ पढ़ाते थे।
तुम मात पिता के हृदय को, पंकज सा नित्य खिलाते थे।।
वस्त्राभूषण भोजन पानी, सुर स्वर्ग से नित ही लाते थे।
सुर खेल खिलौने बन करके, वीरा का मन बहलाते थे।।
जब तीस वर्ष की उम्र हुई, हिंसा ने हा हा कार करी।
वैराग्य हुआ तब इस जग से, वीरा ने सबकी पीर हरी।।
जड़ चेतन भेद किया तुमने, चेतन को तन से अलग जान।
चैतन का ध्यान लगाया फिर, दीक्षा ले करते आत्म ध्यान।।
बारह बरसों तक कठिन योग, करके कर्मों का नाश किया।
तब केवल ज्ञान की ज्योति जगी, भक्तों को फिर उपदेश दिया।।
जा समवशरण में सुर नर पशु, वीरा की वाणी सुनते थे।
अध्यातम अमृत को पाकर, कल्याण के मोती चुनते थे।।
आठों कर्मों के रिश्ते को, पावापुर में जा तोड़ दिया।
निर्वाण हुआ कल्याण हुआ, मुक्ति से नाता जोड़ लिया।।
वीरा तेरे दर्शन को हम, यहां नयन बिछाकर बैठे हैं।
शास्त्रों की वाणी पढ़-पढ़कर, उसमें ही तुमको देखे हैं।।
भक्तों का तुम कल्याण करो, मेरा कल्याण भी कर देना।
हम सच्चे भक्त तुम्हारे हैं, प्रभु मेरी पीड़ा हर लेना।।
जब तक संसार में हूँ भगवन, तेरे चरणों का साथ मिले।
जब तक इस तन में श्वांस रहे, बस तेरे नाम के कमल खिले।।
अंतिम तीर्थकर महावीर, अंतिम इच्छा पूरी करना।
''स्वस्ति'' ने है गुणगान किया, भक्तों को भवसागर तरना।।

दोहा

रत्नत्रय का बोध हो, सात तत्व का ज्ञान।
मुक्ति पथ पर हम चलें, हो जावे कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ाये)

दोहा

मौत का पतझर जब झरे, जपूं आपका नाम।
महावीर के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

(चौपाई छंद)

महावीर की भक्ति करते, महावीर के पथ पर चलते।
महावीर के हम अनुगामी, भक्ति चरण में करें नमामि।।
महावीर ने ज्योति जगायी, भक्त ने वीर की महिमा गायी।
कभी भक्त को दूर न करना, हमें पड़े भवसागर फिरना।।
चरण शरण की सेवा करते, आपहि भक्त के संकट हरते।
दिल्ली शहर में भजनपुरा है, पाठ वही पर आके लिखा है।।
दो दिन में यह पाठ रचा है, प्रभु भक्ति में भाव जंचा है।
चैत सुदी पंचम है प्यारी, दो सहस सन् नौ है न्यारी।।
भावों को स्वीकार करों तुम, भक्तों की भी पीर हरो तुम।
''स्वस्ति'' की गलती क्षमा है करना, भक्ति का बहता है झरना।।

श्री महावीराष्टक पाठ

(हिन्दी रूपान्तरण)

दोहा

महावीर के ज्ञान में, धौव्य व्यय उत्पत्ति।
जड़ चेतन संसार सब, वस्तु की अभिव्यक्ति।।
सूरज मार्ग दिखावता, त्यो मुक्ति का पाथ।
वीर प्रभु बतलावते, पकड़ भव्य का हाथ।।
नयन राह को देखते, महावीर भगवान।
नयनों में विचरण करो, बारंबार प्रणाम।।1।।

नेत्र कमल अरूणा रहित, नहिं टिमकार का कष्ट।
नहीं भव्य पर क्रोध है, उत्तम भाव अभिव्यक्त।।
स्वच्छ शांत सुन्दर सुमुख, सम चतुरस्त्र संस्थान।

रूप देख पुलकित हुआ, हृदय बसो उर आन।।
नयन राह को....।।2।।

इन्द्र नमन करते चरण, मुकुट मणी परकाश।
धारा ज्यों जल की बहे, झरने का आभास।।
नाम लेत शांति मिले, जग का ताप नशाय।
दिव्य ज्ञान दीपक तुम्हीं, मेटो करम कषाय।।
नयन राह को....।।3।।

हो प्रसन्न दुर्दुर मना, वीर दर्श को जाये।
शुभ भावों से मृत्यु पा, ऋद्धि सिद्धि मिल जाये।।
सच्चे भक्त हैं वीरा के, आश्चर्य की क्या बात।
स्वर्ग मोक्ष पदवी मिले, सुख की हो बरसात।।
नयन राह को....।।4।।

काया स्वर्ण समान है, दिव्य ज्ञान के पुंज।
सिद्धारथ नृप सुत भये, करुणाकार निकुंज।।
जीता राग अरु द्वेष है, वीतरागी कहलाये।
जन्म-मरण को नष्ट कर, कर्म मेघ हटवाये।।
नयन राह को....।।5।।

दिव्यामृत गंगा तेरी, नय करती कल्लोल।
वचन नीर स्नान कर, शुद्ध हृदय को खोल।।
ज्ञानी ध्यानी हंस भी, गंगा डूब नहाये।
कलयुग में जिनवाणी मां, सबकी करे सहाय।।
नयन राह को....।।6।।

दुर्निवार है काम बल, निज आतम बल तेज।
जीत लिया था आपने, पाया सौख्य विशेष।।
नित्यानंद शांति मिले, मुक्ति पथ का भाव।
भुजबल से जीता जिसे, शांति वृक्ष की छांव।।
नयन राह को....।।7।।

मोह महा आंतक को, वैद्य बने हैं आप।
स्वार्थ रहित सबका भला, करें मिटाते ताप।।
जो घबराये जगत में, उनको दे आधार।
प्रसिद्ध महिमा आपकी, गुण गण के भण्डार।।
नयन राह को....।।8।।

भक्ति भाव से जो पढ़े, वीरा अष्टक पाठ।
दुख संकट मिटते सभी, होते सारे ठाठ।।
भागचंद्र जी ने रचा, 'स्वस्ति' ने अनुवाद।
मुक्ति पुरी की भावना, चाहूं आशीर्वाद।।

श्री महावीर चालीसा

दोहा

नमन करूं परमेष्ठी को, परमागम को ध्याय।
श्री आचारज साधु को, शत-शत शीश नवाय।।
पद्म सरोवर बीच से, पाया पद निर्वाण।
महावीर भगवान को, शत-शत करूं प्रणाम।।

चौपाई

जय हो जय श्री महावीर स्वामी, कर्म काट तुम हुये अकामी।
हाथ जोड़कर शीश नवावें, तुम सम हम मुक्ति को जावें।।
वर्द्धमान अंतिम तीर्थंकर, चरणों में झुकता है अंबर।
वीतरागता धारण कीना, निज पर का कल्याण है कीना।।
त्रिशला ने नंदन को जाया, सुर नर ने खुशियों को पाया।
भक्त चरण की सेवा करते, भक्ति से कष्टों को हरते।।
सिद्धारथ जी भाग्य तुम्हारा, वीरा पाया जग उजियारा।
त्रिशला मां ने तुम्हें पुकारा, वर्द्धमान वह नाम था प्यारा।।
बिगड़े हाथी को समझाया, तब ही वीरा नाम को पाया।।
दर्श करे मिट गई थी शंका, मुनि ने सन्मति नाम था रक्खा।
कृष्ण सर्प को वश में कीना, अतिवीर तुम नाम को लीना।।
देवों ने फिर जय-जयकारा, नाम तुम्हारा वीर पुकारा।
सुंदर रूप दिगम्बर धारा, तजा महल बगिया चौबारा।।

तरुण अवस्था धारी दीक्षा, आत्मज्ञान की पाई शिक्षा।
प्रभु ने आतम ध्यान लगाया, केवल ज्ञान उन्होंने पाया।।
चंदन का वंदन स्वीकारा, समवशरण गणिनी पद धारा।
भक्त चरण की सेवा करते, भक्तों के कष्टों को हरते।।
मन रूपी मैं वेदी बनाऊं, वीरा उसमें तुम्हें बिठाऊं।
चरणों को तेरे पूजूंगा, तेरे दर्शन को पा लूंगा।।
भव से बेड़ा पार करा दो, जीवन का उद्धार करा दो।
आखिर हम हैं दास तुम्हारे, दिल में भर दो ज्ञान हमारे।।
तारण तरण कहाओ स्वामी, आवागमन मिटाओ स्वामी।
दर्शन को मन अकुलाता है, वीरा-वीरा यह गाता है।।
काटो जनम मरण का फेरा, हम अहसान मानते तेरा।
बहती थी जब खून की धारा, धर्म अहिंसा दिया था नारा।।
स्याद्धाद आगम बतलाया, मिथ्यातम एकांत मिटाया।
छाई चारों ओर अहिंसा, दूर हुई यज्ञों की हिंसा।।
मेरे उर में आन विराजे, भाग्य सभी भक्तों के जागे।
चमत्कार प्रभु दिखलाते हैं, धर्म सभी को सिखलाते हैं।।
धर्म अहिंसा सबसे प्यारा, तुमने इसका दिया था नारा।
जियो और जीने दो वाणी, होती है यह जन कल्याणी।।
सब जीवों पर समता धारी, दया के तुम गुण गण भंडारी।
दिल से भक्ति करें तुम्हारी, दुष्कर्मों की शक्ति हारी।।
जो भी तेरा ध्यान लगाऐ, चिंता हर शान्ति को पाये।
मेरी नैया तेरे सहारे, अब तुम ही प्रभु करो किनारे।।
ज्ञान ध्यान तप को न जानूं, राग द्वेष को नित ही मानूं।
कमल सहित है पद् सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर।।
कार्तिक श्याम अमावस आई, पावापुर से मुक्ति पाई।
'स्वस्ति' तेरी शरण में आई, संयम में प्रभो बनो सहाई।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पाठ करे जो कोय।
सुख संपत्ति पावे अतुल, दुख दरिद्र सब खोय।।
महावीर भगवान की, मूरत है मनहार।
भक्ति करते भाव से, हो जाते भव पार।।

आरती महावीर स्वामी

वीरा महावीरा स्वामी, मेटो दुख अंतर्यामी।
हम सब उतारें तेरी आरती, ओ वीरा,
कुण्डलपुर के अवतारी हो, माता त्रिशला के नंदन।
भक्ति करते पूजा करते, मन हो जायेगा चंदन।। जिनवर
भक्ति के भाव मैं लाऊं, श्रद्धा से शीश झुकाऊं।
हम सब उतारें तेरी, आरती...।।
तुम परमातम तुम अध्यातम, तुम हो अंतर्यामी।
आत्मज्ञान की राह दिखा, चलना सिखलाया स्वामी।। जिनवर
वंदन है तुमको मेरा, आशीष मैं पाऊं तेरा।
हम सब उतारें तेरी, आरती...।।
सिद्ध क्षेत्र श्री पावापुर के, मध्य सरोवर आये।
आठ कर्म को नष्ट किया, निर्वाण तभी तुम पाये।। जिनवर
सोना न चांदी मांगू, हीरा ना मोती मांगू।
तेरी ही भक्ति चाहूं, हम सब उतारें तेरी आरती।।
ओ बाबा...

व्रत की विधि

श्री महावीर विधान व्रत, प्रभु महावीर की आराधना साधना और उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इस विधान से मनवांछित फल स्वयं ही प्राप्त होते हैं। क्योंकि प्रभु महावीर स्वयं ही कल्पवृक्ष हैं। प्रभु के गुण अनंत हैं किन्तु 108 गुणों की स्तुति कर व्रत किये जायेंगे। एक गुण में अनंत गुण समाहित हैं। यदि इन्ही गुणों की साधना भाव से की जाये तो सच्चे सुख की प्राप्ति भी संभव है।

शक्ति के अनुसार एकासन उपवास आदि कर सकते हैं। इस व्रत का प्रारम्भ भगवान महावीर के किसी भी कल्याणक की तिथि से प्रारम्भ करें और मोक्ष कल्याणक की तिथि या किसी शुभ दिन समापन करें। उद्यापन में श्री महावीर विधान करें एवं इच्छित वस्तु का दान करें। यह व्रत स्वयं करके दूसरे को करने की प्रेरणा दें। इस तरह 108 व्रत करके मनवांछित फल प्राप्त करें।

निम्नलिखित मंत्र क्रम से व्रत के दिन करें :-

1. ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
2. ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

3. ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
4. ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुंदुंभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
13. ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
14. ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
15. ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
16. ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
17. ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
18. ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्याग भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
19. ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
20. ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
21. ॐ ह्रीं वैय्यावृत्य करण भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
22. ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
23. ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
25. ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
26. ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
27. ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
28. ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
29. ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
30. ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
31. ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
32. ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
33. ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
34. ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
35. ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
36. ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
37. ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
39. ॐ ह्रीं श्वेद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

40. ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
41. ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
42. ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
43. ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
44. ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
45. ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
46. ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
47. ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
48. ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
49. ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
50. ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
51. ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
52. ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
53. ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
54. ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
55. ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
56. ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
57. ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
58. ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
59. ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
60. ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
61. ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
62. ॐ ह्रीं ध्याता ध्यान ध्येय पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
63. ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
64. ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
65. ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
66. ॐ ह्रीं मन चित्त शांति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
67. ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
68. ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
69. ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
70. ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
71. ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
72. ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
73. ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
74. ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
75. ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
76. ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

77. ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
78. ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
79. ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
80. ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
81. ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
82. ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
83. ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
84. ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
85. ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
86. ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
87. ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
88. ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
89. ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
90. ॐ ह्रीं पावन आत्मा दर्शनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
91. ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
92. ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
93. ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
94. ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
95. ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
96. ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
97. ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
98. ॐ ह्रीं शुभ निमित प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
99. ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
100. ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धी प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
101. ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
102. ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
103. ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
104. ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
105. ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
106. ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
107. ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः
108. ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

(इति विधान सम्पूर्ण)